ये अव्यक्त इशारे

अब सम्पन्न वा कर्मातीत बनने की धुन लगाओ

22-12-2025

अब सेवा के कर्म के भी बन्धन में नहीं आओ। हमारा स्थान, हमारी सेवा, हमारे स्टूडेन्ट, हमारी सहयोगी आत्मायें, यह भी सेवा के कर्म का बन्धन है, इस कर्मबन्धन से कर्मातीत। तो कर्मातीत बनना है और ''यह वही हैं, यही सब कुछ हैं,'' यह महसूसता दिलाए आत्माओं को समीप ठिकाने पर लाना है।

Now have the deep concern become complete and karmateet.

Do not now have any bondage of actions while doing service. "My place, my service, my students, my co-operative souls." These too are karmic bondages of service. Be karmateet even of these karmic bondages. This is becoming karmateet. Give them the realisation that this is the same One, that this One is everything, and bring souls close to their destination.